श्री मोक्षशास्त्र टीका की विषय सूची

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	मंगलाचरण	१
	शास्त्रके विषयोंका संक्षेपमें कथन	१ से ५
	प्रथम अध्याय पृष्ठ ५ से ११८ तक	
१	मोक्षकी प्राप्तिका उपाय—निश्चय मोक्षमार्गः	५
	पहले सूत्रका सिद्धान्त	७
२	निश्चय सम्यग्दर्शनका लक्षण	
	'तत्त्व' शब्दका मर्म	९
	सम्यग्दर्शनकी महिमा	१०
	सम्यग्दर्शनका बल	१४
	सम्यग्दर्शनके भेद तथा अन्य प्रकार	१४
	सराग सम्यग्दृष्टिके प्रशमादि भाव	१५
	सम्यग्दर्शनका विषय-लक्ष्य-स्वरूप	१६
	यह सूत्र निश्चय सम्यग्दर्शनके लिये है उसके शास्त्राधार	
३	निश्चय सम्यग्दर्शनके उत्पत्तिकी अपेक्षासे भेद	२०
	तीसरे सूत्रका सिद्धान्त	१७
४	तत्त्वोंके नाम तथा स्वरूप	१८
	चौथे सूत्रका सिद्धान्त	२१
५	निश्चय सम्यग्दर्शनादि शब्दोंके अर्थ समझनेकी रीति	२५
	निक्षेपके भेदोंकी व्याख्या	२६
	पाँचवें सूत्रका सिद्धान्त	२८
६	निश्चय सम्यग्दर्शनादि जाननेका उपाय	२८
	प्रमाण, नय, युक्ति	२८–२९
	अनेकान्त एकान्त, सम्यक् और मिथ्या अनेकान्तका स्वरूप तथा दृष्टान्त	३०

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	'सत्' शब्दके प्रयोगका कारण	४८
	संख्या और विधानमें अन्तर	,,
	क्षेत्र और अधिकरणमें अन्तर वगैरह	४६
	'भाव' शब्दका निक्षेपके सूत्रमें कथन होने पर भी यहाँ किसलिये कहा ? विस्तृत वर्णनका प्रयोजन,	५०
	ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण	,,
	सूत्र ४ से ८ तकका तात्पर्यरूप सिद्धान्त	५१
६	सम्यग्ज्ञानके भेद–मतिज्ञानादि पाँचों प्रकारका स्वरूप	५२
	नवमें सूत्रका सिद्धान्त	५३
१०	कौनसे ज्ञान प्रमाण हैं ?	५३
	सूत्र ६–१० का सिद्धान्त	५५
११	परोक्ष प्रमाणके भेद	५५
	क्या सम्यक् मतिज्ञान यह जान सकता है कि अमुक जीव भव्य है या अभव्य ?	५६
	मति-श्रुतिज्ञानको परोक्ष कहा उसका विशेष समाधान	५७
१२	प्रत्यक्ष प्रमाणके भेद	५८
१३	मतिज्ञानके नाम	५८
१४	मतिज्ञानकी उत्पत्तिके समय निमित्त	६०
	मतिज्ञानमें ज्ञेय पदार्थ और प्रकाशको भी निमित्त क्यों नहीं कहा ?	६२
	निमित्त और उपादान	६४–६५
१५	मतिज्ञानके क्रमके भेद—अवग्रह, ईहादिका स्वरूप	६५
१६	अवग्रहादिके विषयभूत पदार्थ	६७
	बहु, बहुविधादि बारह भेदकी व्याख्या	६७–६८
	प्रत्येक इन्द्रिय द्वारा होनेवाले इन बारह प्रकारके मतिज्ञानका स्पष्टीकरण,	६६
	शंका–समाधान	७२–७५
१७	अवग्रहादिके विषयभूत पदार्थ भेद किसके हैं ?	७६

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
१८	अवग्रह ज्ञानमें विशेषता	७७
	अर्थावग्रह—व्यंजनावग्रहके दृष्टान्त	”
	अव्यक्त—व्यक्तका अर्थ	७८
	अव्यक्त और व्यक्तज्ञान अर्थात् व्यंजनावग्रह-अर्थावग्रह	”
	ईहा, अवाय, धारणाका विशेष स्वरूप	७६
	एकके बाद दूसरा ज्ञान होना ही है या नहीं ?	”
	ईहा ज्ञान सत्य है ?	”
	'धारणा' और 'संस्कार' के बारेमें स्पष्टीकरण	८०
	चार भेदोंकी विशेषता	८१
१६	व्यंजनावग्रहज्ञान नेत्र और मनसे नहीं होता	८१
२०	श्रुतज्ञानका वर्णन, उत्पत्तिका क्रम तथा उसके भेद	८२
	श्रुतज्ञानकी उत्पत्तिके दृष्टान्त	”
	अक्षरात्मक, अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान	८४
	श्रुतज्ञानी उत्पत्तिमें मतिज्ञान निमित्तमात्र है	८३
	मतिज्ञानके समान ही श्रुतज्ञान क्यों नहीं ?	”
	श्रुतज्ञान साक्षात् मतिज्ञानपूर्वक और परम्परा मतिपूर्वक	८३-८४
	भावश्रुत और द्रव्यश्रुत	८४
	प्रमाणके दो प्रकार, 'श्रुत' के अर्थ	८५
	बारह अंग, चौदह पूर्व	”
	मति और श्रुतज्ञानके बीचका भेद	८६
	विशेष स्पष्टीकरण	८७
	सूत्र ११ से २० तकका सिद्धान्त	”
२१	अवधिज्ञानका वर्णन—भव और गुण अपेक्षासे	८८
२२	क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञानके भेद तथा उनके स्वामी	८६
	अनुगामी आदि छह भेदका वर्णन	”
	द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव अपेक्षासे अवधिज्ञानका विषय	६०-६१
	क्षयोपशमका अर्थ	६१

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	सूत्र २१—२२ का सिद्धान्त	६२
२३	मनःपर्यय ज्ञानके भेद	६२
२४	ऋजुमति और विपुलमतिमें अन्तर	६५
२५	अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञानमें विशेषता	,,
२६	मति—श्रुतज्ञानका विषय	६६
२७	अवधिज्ञानका विषय	६७
२८	मनःपर्ययज्ञानका विषय	,,
	सूत्र २७-२८ का सिद्धान्त	६८
२६	केवलज्ञानका विषय	६८
	केवली भगवानके एक ही ज्ञान होता है या पाँचों	६६
	सूत्र २६ का सिद्धान्त	१००
३०	एक जीवके एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	१००
	सूत्र ६ से ३० तकका सिद्धान्त	१०१
३१	मति, श्रुत और अवधिज्ञानमें मिथ्यात्व भी होता है	१०२
३२	मिथ्यादृष्टि जीवके ज्ञानको मिथ्या क्यों कहा ?	१०३
	कारणविपरीतता, स्वरूपविपरीतता, भेदाभेदविपरीतता,	१०४-५
	इन तीनोंको दूर करनेका उपाय	१०५
	सत् असत्, ज्ञानका कार्य, विपरीत ज्ञानके दृष्टान्त	१०६-१०८
३३	प्रमाणका स्वरूप कहा, श्रुतज्ञानके अंशरूप नयका स्वरूप कहते हैं	१०६
	अनेकान्त, स्याद्वाद और नयकी व्याख्या	१०६
	नैगमादि सात नयोंका स्वरूप	१०६
	नयके तीन प्रकार (शब्द-अर्थ और ज्ञाननय)	१११-११२
	श्रीमद् राजचन्द्रजीने आत्माके सम्बन्धमें इन सात नयोंको चौदह प्रकारसे कैसे उत्तम ढगसे अवतरित किये हैं ?	११२
	वास्तविकभाव लौकिकभावोंसे विरुद्ध	११३
	पाँच प्रकारसे जैन शास्त्रोंके अर्थ समझानेकी रीति	११३

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	नयोंके सक्षेप स्वरूप, जैन नीति तथा नयोंकी सुलझन	११५–११८
	प्रथम अध्यायका परिशिष्ट—१	११६
	सम्यग्दर्शनके सम्बन्धमें कुछ ज्ञातव्य	११६
	सम्यग्दर्शनकी आवश्यकता, स० द० क्या है	११६
	श्रद्धा गुणकी मुख्यतासे निश्चय सम्यग्दर्शन	१२०
	ज्ञान गुणकी मुख्यतासे निश्चय सम्यग्दर्शन	१२१
	चारित्र गुणकी मुख्यतासे निश्चय सम्यग्दर्शन	१२३
	अनेकान्त स्वरूप	१२४
	सम्यग्दर्शन सभी सम्यग्दृष्टियोंके एक समान	१२४
	सम्यग्ज्ञान सभी " सम्यक्त्वकी अपेक्षासे समान है अवस्थामें विकासका कम, बढ़ होना वगैरह अपेक्षासे समान नहीं है	१२४
	सम्यक् चारित्रमें भी अनेकान्त	१२४
	दर्शन (श्रद्धा) ज्ञान, चारित्र इन तीनों गुणोंकी अभेद दृष्टिसे निश्चय सम्यग्दर्शनकी व्याख्या—	१२५
	निश्चय सम्यग्दर्शनका चारित्रके भेदोंकी अपेक्षासे कथन	१२५
	निश्चय सम्यग्दर्शनके बारेमें प्रश्नोत्तर	१२५
	व्यवहार सम्यग्दर्शनकी व्याख्या	१२६
	व्यवहाराभास सम्यग्दर्शनको कभी व्यवहार सम्यग्दशन भी कहते हैं।	१२७
	सम्यग्दर्शनके प्रगट करनेका उपाय	१२८
	निर्विकल्प अनुभवका प्रारम्भ	१३०
	सम्यग्दर्शन पर्याय है तो भी उसे गुण कैसे कहते हैं	१३०
	सभी सम्यग्दृष्टियोंका स० द० समान है	१३१
	सम्यग्दर्शनके भेद क्यों कहे गये हैं ?	१३१
	सम्यग्दर्शनकी निर्मलता	१३२
	सम्यक्त्वकी निर्मलतामें पॉच भेद किस अपेक्षासे	१३३

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	सम्यग्दृष्टि जीव अपनेको सम्यक्त्व प्रगट होनेकी बात श्रुतज्ञान द्वारा बराबर जानते हैं।	१३४–४०
	स० द० सम्बन्धी कुछ प्रश्नोत्तर	१४०–४२
	ज्ञान चेतनाके विधानमें अन्तर क्यों है ?	१४३–१५०
	ज्ञान चेतनाके सम्बन्धमें विचारणीय नव विषय	१४३
	अक्रमिकविकास और क्रमिकविकासका दृष्टान्त	१४५
	इस विषयके प्रश्नोत्तर और विस्तार	१४७
	सम्यग्दर्शन और ज्ञान चेतनामें अन्तर	१५४
	चारित्र न पले फिर भी उसकी श्रद्धा करनी चाहिये	१५४
	निश्चय सम्यग्दर्शनका दूसरा अर्थ	१५५
	प्रथम अध्यायका परिशिष्ट—२	१५७
	निश्चय सम्यग्दर्शन—	१५७–१६३
	निश्चय सम्यग्दर्शन क्या है और उसे किसका अवलम्बन	१५७
	भेद-विकल्पसे स० द० नहीं होता	१५८
	विकल्पसे स्वरूपानुभव नहीं हो सकता	१५९
	सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानका सम्बन्ध किसके साथ	१६०
	श्रद्धा-ज्ञान सम्यक् कब हुए	१६१
	सम्यग्दर्शनका विषय, मोक्षका परमार्थ कारण	१६२
	सम्यग्दर्शन ही शान्तिका उपाय है सम्यग्दर्शन ही संसारका नाशक है	१६२–१६३
	प्रथम अध्यायका परिशिष्ट—३	१६४
	जिज्ञासुको धर्म किस प्रकार करना	१६४
	पात्र जीवका लक्षण	१६४
	सम्यग्दर्शनके उपायके लिये ज्ञानियोंके द्वारा बताई गई क्रिया	१६५
	श्रुतज्ञान किसे कहना	१६५
	श्रुतज्ञानका वास्तविक लक्षण-अनेकान्त	१६६
	भगवान भी दूसरेका कुछ नहीं कर सके	१६६

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	प्रभावनाका सच्चा स्वरूप	१६६
	सच्ची दया (अहिंसा)	१६७
	आनन्दकारी भावनावाला क्या करे	१६७
	श्रुतज्ञानका अवलम्बन ही प्रथम क्रिया है	१६८
	धर्म कहाँ और कैसे ?	१६६
	सुखका उपाय ज्ञान और सत् समागम	१७०
	जिस ओर की रुचि उसीका रटन	१७२
	श्रुतज्ञानके अवलम्बनका फल—आत्मानुभव	१७४
	सम्यग्दर्शन होनेसे पूर्व	१७५
	धर्मके लिये प्रथम क्या करें	१७६
	सुखका मार्ग, विकारका फल, असाध्य, शुद्धात्मा	१७७
	धर्मकी रुचिवाले जीव कैसे होते हैं ?	१७८
	उपादान निमित्त और कारण-कार्य	१७६
	अन्तरंग अनुभवका उपाय-ज्ञानकी क्रिया	१७६
	ज्ञानमें भव नहीं है	१८०
	इसप्रकार अनुभवमें आनेवाला शुद्धात्मा कैसा है ?	१८१
	निश्चय-व्यवहार	१८१
	सम्यग्दर्शन होने पर क्या होता है	१८२
	बारम्बार ज्ञानमें एकाग्रताका अभ्यास	१८२
	अन्तिम अभिप्राय	१८३-८४
	प्रथम अ० का परिशिष्ट—४	१८५
	तत्त्वार्थ श्रद्धानको स० द० का लक्षण कहा है उस लक्षणमें अव्याप्ति आदि दोषका परिहार	१८५
	प्रथम अध्यायका परिशिष्ट नं० ५—	२००-२१४
	केवलज्ञान [केवलीका ज्ञान] का स्पष्टरूप और अनेक शास्त्रोंका आधार—	२००-२१४

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	अध्याय दूसरा	
१	जीवके असाधारण भाव	२१५
	औपशमिकादि पाँच भावोंकी व्याख्या	२१५
	यह पाँच भाव क्या बतलाते हैं ?	२१७
	इनके कुछ प्रश्नोत्तर	२१८
	औपशमिक भाव कब होता है	२१९
	उनकी महिमा	२२०
	पाँच भावोंके सम्बन्धमें कुछ स्पष्टीकरण	२२१
	पाँच भावोंके सम्बन्धमें विशेष "	२२५
	जीवका कर्त्तव्य	२२४
	इस सूत्रमें नय-प्रमाणकी विवक्षा	२२६
२	भावोंके भेद	२२६
३	औपशमिक भावके दो भेद	२२६
४	क्षायिकभावके नव भेद	२२७
५	क्षायोपशमिक भावके १८ भेद	२२९
६	औदयिक भावके २१ भेद	२३०
७	पारिणामिकभावके तीन भेद	२३२
	उनके विशेष स्पष्टीकरण	२३३
	अनादि अज्ञानीके कौनसे भाव कभी नहीं हुए ?	२३४
	औपशमिकादि तीन भाव कैसे प्रगट होते हैं ?	२३४
	कौनसे भाव बन्धरूप हैं	२३४
८	जीवका लक्षण	२३५
	आठवें सूत्रका सिद्धान्त	२३६
९	उपयोग के भेद	२३७
	साकार-निराकार	२३९-४०
	दर्शन और ज्ञानके बीचका भेद	२४०
	उस भेदकी अपेक्षा और अभेदकी अपेक्षासे दर्शन-ज्ञानका अर्थ	२४१

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
१०	जीवके भेद	२४२
	संसारका अर्थ	२४३
	द्रव्य परिवर्तन, क्षेत्र परि० काल परि०-भव और भाव परिवर्तनका स्वरूप	२४४ से ४८
	भाव परिवर्तनका कारण	२४८
	मानव भवकी सार्थकताके लिये विशेष	२५०
११	संसारी जीवोंके भेद	२५१
१२	संसारी जीवोंके अन्य प्रकारसे भेद (त्रस-स्थावर)	२५३
१३	स्थावर जीवोंके भेद	२५३
	इन पृथिवी आदिकोंके चार चार भेद	२५४
१४	त्रस जीवोंके भेद	२५५
१५	इन्द्रियोंकी संख्या	२५६
१६	इन्द्रियोंके मूल भेद	२५७
१७	द्रव्येन्द्रियका स्वरूप	२५७
१८	भावेन्द्रियका स्वरूप (लब्धि-उपयोग)	२५८
	इस सूत्रका सिद्धान्त	२५६
१९	पाँच इन्द्रियोंके नाम और क्रम	२६०
२०	इन्द्रियोंके विषय	२६०
२१	मनका विषय	२६२
२२	इन्द्रियोंके स्वामी	२६३
२३	इन्द्रियोंके स्वामी और क्रम	२६३
२४	सैनी किसे कहते हैं ?	२६४
२५	विग्रहगतिवान जीवको कौनसा योग है	२६४
२६	विग्रहगतिमें जीव और पुद्गलोंका गमन कैसे होता है ?	२६५
२७	मुक्त जीवोंकी गति कैसी होती है ?	२६५
२८	संसारी जीवोंकी गति और उनका समय	२६६
२९	अविग्रहगतिका समय	२६७

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
३०	अविग्रहगतिमें आहारक अनाहारककी व्यवस्था	२६७
३१	जन्मके भेद	२६८
३२	योनियोंके भेद	२६९
३३	गर्भ जन्म किसे कहते हैं ?	२७१
३४	उपपादजन्म किसे कहते हैं ?	२७१
३५	सम्मूर्च्छन जन्म किसके होता है ?	२७२
३६	शरीरके नाम तथा भेद	२७२
३७	शरीरोंकी सूक्ष्मताका वर्णन	२७३
३८	पहिले पहिले शरीरकी अपेक्षा आगे आगेके शरीरोंके प्रदेश-	
३९	थोड़े होंगे या अधिक ?	२७३–२७४
४०	तैजस-कार्माण शरीरकी विशेषता	२७४
४१	तैजस-कार्माण शरीरकी अन्य विशेषता	२७५
४२	वे शरीर संसारी जीवोंके अनादि कालसे हैं	२७६
४३	एक जीवके एक साथ कितने शरीरोंका सम्बन्ध ?	२७६
४४	कार्मण शरीरकी विशेषता	२७७
४५	औदारिक शरीरका लक्षण	२७८
४६	वैक्रियिक शरीरका लक्षण	२७९
४७	देव और नारकियोंके अतिरिक्त दूसरोंके वैक्रियिक शरीर होता है या नहीं ?	२७९
४८	वैक्रियिकके अतिरिक्त किसी अन्य शरीरको भी लब्धिका निमित्त है ?	२७९
४९	आहारक शरीरका स्वामी तथा उसका लक्षण	२८०
	आहारक शरीरका विस्तारसे वर्णन	२८०
५०	लिंग-वेदके स्वामी	२८२
५१	देवोंके लिंग	२८२
५२	अन्य कितने लिंग वाले हैं ?	२८३
५३	किनकी आयु अपवर्तन (-अकाल मृत्यु) रहित है ?	२८३

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	अध्याय २ का उपसंहार	२६५
	पारिणामिक भावके सम्बन्धमें	२६६
	धर्म करनेके लिये पाँच भावोंका ज्ञान उपयोगी है ?	२६७
	उपादान और निमित्त कारणके सम्बन्धमें—	२८७
	पाँच भावोंके साथ इस अध्यायके सूत्रोंके सम्बन्धका स्पष्टीकरण	२९०
	निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध	२९३
	तात्पर्य	२९४

अध्याय तीसरा

	भूमिका	२९८
	अधोलोकका वर्णन	३००
१	सात नरक-पृथिवियाँ	३०४
२	सात पृथिवियोंके बिलोंकी संख्या	३०१
	नरक गति होनेका प्रमाण	३०१
३	नारकियोंके दुःखोंका वर्णन	३०२
४	नारकी जीव एक दूसरेको दुःख देते हैं	३०३
५	विशेष दुःख	३०३
६	नारकोंकी उत्कृष्ट आयुका प्रमाण	३०४
	सम्यग्दृष्टियोंको नरकमें कैसा दुःख होता है ?	३०६
७	मध्यलोकका वर्णन, कुछ द्वीप समुद्रोंके नाम	३०८
८	द्वीप और समुद्रोंका विस्तार और आकार	३०९
९	जम्बूद्वीपका विस्तार और आकार	३०९
१०	उसमें सात क्षेत्रोंके नाम	३१०
११	सात विभाग करनेवाले छह पर्वतोंके नाम	३१०
१२	कुलाचल पर्वतोंका रंग	३१०
१३	कुलाचलोंका विशेष स्वरूप	३११
१४	कुलाचलोंके ऊपर स्थित सरोवरोंके नाम	३११

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
१५	प्रथम सरोवरकी लम्बाई-चौड़ाई	३११
१६	प्रथम सरोवरकी गहराई	३११
१७	उसके मध्यमें क्या है ?	३११
१८	महापद्मादि सरोवरों तथा उनमें कमलोंका प्रमाण ह्रदोंका विस्तार आदि	३१२
१९	छह कमलोंमें रहनेवाली छह देवियाँ	३१२
२०	चौदह महा नदियोंके नाम	३१३
२१-२२	नदियोंके बहनेका क्रम	३१३
२३	इन चौदह महा नदियोंकी सहायक नदियाँ	३१४
२४	भरत क्षेत्रका विस्तार	३१४
२५	आगेके क्षेत्र और पर्वतोंका विस्तार	३१५
२६	विदेह क्षेत्रके आगेके पर्वत-क्षेत्रोंका विस्तार	३१५
२७	भरत और ऐरावत क्षेत्रमें कालचक्रका परिवर्तन	३१६
	भरत-ऐरावतके मनुष्योंकी आयु तथा ऊँचाई	३१७
	तथा मनुष्योंका आहार	३१८
२८	अन्य भूमियोंकी काल व्यवस्था	३१८
२९	हैमवतक इत्यादि क्षेत्रोंमें आयु	३१८
३०	हैरण्यवतकादि क्षेत्रोंमें आयु	३१९
३१	विदेह क्षेत्रमें आयुकी व्यवस्था	३१९
३२	भरतक्षेत्रका विस्तार दूसरी तरहसे	३२०
३३	धातकी खण्डका वर्णन	३२०
३४	पुष्करार्ध द्वीपका वर्णन	३२०
३५	मनुष्य क्षेत्र, ३६-मनुष्योंके भेद	३२१
	(आर्य-म्लेच्छ)	३२१
	ऋद्धिप्राप्त आर्यकी आठ प्रकारकी तथा अनेक प्रकारकी रूढ़ियोंका वर्णन	३२२ से ३३०
	अनऋद्धि प्राप्त आर्य	३३०

सूत्र. नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	म्लेच्छ	३३२
३७	कर्म भूमिका वर्णन	३३२
३८	मनुष्योंकी उत्कृष्ट तथा जघन्य आयु	३३३
३९	तिर्यंचोंकी आयु स्थिति	३३४
	क्षेत्रके नापका कोष्टक	३३५
	उत्तरकुरु, देवकुरु, लवणसमुद्र, धातकी द्वीप, कालोदधिसमुद्र, पुष्करद्वीप, नरलोक, दूसरे द्वीप, समुद्र, कर्मभूमि–भोगभूमि और कर्मभूमि जैसा क्षेत्र	३३७

चतुर्थ अध्याय

	भूमिका	३३७
१	देवोंके भेद	३४०
२	भवनत्रिक देवोंमें लेश्याका विभाग	३४१
३	चार निकायके देवोंके प्रभेद	३४१
४	चार प्रकारके देवोंके सामान्य भेद	३४२
५	व्यन्तर, ज्योतिषी देवोंमें इन्द्र आदि भेदोंकी विशेषता	३४३
६	देवोंमें इन्द्रोंकी व्यवस्था	३४३
७,८,९,	देवोंका काम सेवन सम्बन्धी वर्णन	३४४–३४५
१०	भवनवासी देवोंके भेद	३४७
११	व्यन्तर देवोंके आठ भेद	३४९
१२	ज्योतिषी देवोंके पाँच भेद	३५०
१३	ज्योतिषी देवोंके विशेष वर्णन	३५१
१४	उससे होनेवाला काल विभाग	३५१
१५	अढ़ाई द्वीपके बाहर ज्योतिषी देव	३५१
१६	वैमानिक देवोंका वर्णन	३५२
१७	वैमानिक देवोंके भेद	३५२
१८	कल्पोंकी स्थितिका क्रम	३५३

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
१६	वैमानिक देवोंके रहनेका स्थान	३५३
२०	वैमानिक देवोंमें उत्तरोत्तर अधिकता	३५४
२१	वैमानिक देवोंमें उत्तरोत्तर हीनता	३५५
	शुभ भावके कारण कौन जीव किस स्वर्गमें उत्पन्न होता है उसका स्पष्टीकरण	३५६
	देवशरीरसे छूटकर कौनसी पर्याय धारण करता है उसका वर्णन	३५८
	इस सूत्रका सिद्धान्त	३५६
२२	वैमानिक देवोंमें लेश्याका वर्णन	३६१
२३-२४	कल्पसंज्ञा कहाँ तक; लोकान्तिकदेव	३६२
२५	लौकान्तिक देवोंके नाम	३६२
२६	अनुदिश और अनुत्तरवासी देवोंके अवतारका नियम	३६३
२७	तिर्यंच कौन है ?	३६४
२८	भवनवासी देवोंकी उत्कृष्ट आयु	३६४
२६	वैमानिक देवोंकी उत्कृष्ट आयु	३६४
३०-३१	सानत्कुमारादिकी आयु	३६५
३२	कल्पातीत देवोंकी आयु	३६६
३३-३४	स्वर्गोंकी जघन्य आयु	३६७
३५-३६	नारकियोंकी जघन्य आयु	३६७-६८
३७	भवनवासी देवोंकी जघन्य आयु	३६८
३८	व्यन्तर देवोंकी जघन्य आयु	३६८
३६	व्यन्तर देवोंकी उत्कृष्ट आयु	३६८
४०	ज्योतिषी देवोंकी उत्कृष्ट आयु	३६८
४१	ज्योतिषी देवोंकी जघन्य आयु	३६८
४२	लौकान्तिक देवोंकी आयु, उपसंहार	३६६
	सप्तभंगी [स्यात् अस्ति-नास्ति]	३७०
	साधक जीवोंको उसके ज्ञानसे लाभ	३७१

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	अ० २ से ४ तक यह अस्ति नास्ति स्वरूप कहाँ कहाँ बताया है उसका वर्णन	३७२ से ३७४
	सप्तभंगीके शेष पाँच भंगका वर्णन	३७४
	जीवमें अवतरित सप्तभंगी	३७४
	उसमें लागू होने वाले नय	३७५
	प्रमाण, निक्षेप, स्वज्ञेय, अनेकान्त	३७५-३७६
	सप्तभंगी और अनेकान्त	३७६
	नय, अध्यात्मके नय, उपचार नय—	३७८-३८१
	सम्यग्दृष्टिका और मिथ्यादृष्टिका ज्ञान	३८०
	अनेकान्त क्या बतलाता है ?	३८१
	शास्त्रोंके अर्थ करनेकी पद्धति	३८२
	मुमुक्षुओंका कर्त्तव्य	३८३
	देवगतिकी व्यवस्था [भवनत्रिक]	३८४
	देवगतिकी व्यवस्था (वैमानिक)	३८६

पंचम अध्याय

	भूमिका	३८८
१	अजीव तत्त्वका वर्णन	३८९
२	ये अजीवकाय क्या है	३९१
३	द्रव्यमें जीवकी गिनती	३९२
४	पुद्गल द्रव्यसे अतिरिक्त द्रव्योंकी विशेषता	३९३
	'नित्य' और 'अवस्थित' का विशेष स्पष्टीकरण	»
५	एक पुद्गल द्रव्यका ही रूपित्व बतलाते हैं	३९५
६	धर्मादि द्रव्योंकी संख्या	३९६
७	इनका गमन रहितत्व	»
८	धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और एक जीवद्रव्यके प्रदेशोंकी संख्या	३९७-९८
९	आकाशके प्रदेश	३९९

सूत्र नम्बर	विषय	पृष्ठ संख्या
१०	पुद्गलके प्रदेशोंकी संख्या	४९९
११	अणु एक प्रदेशी है	५००
	द्रव्योंके अनेकान्त स्वरूपका वर्णन	५००
१२	समस्त द्रव्योंके रहनेका स्थान	५०३
१३	धर्म-अधर्म द्रव्यका अवगाहन	५०४
१४	पुद्गलका अवगाहन	५०६
१५	जीवोंका अवगाहन	५०७
१६	जीवोंका अवगाहन लोकके असंख्यात भागमें कैसे	५०९
१७	धर्म और अधर्म द्रव्यका जीव और पुद्गलके साथका विशेष सम्बन्ध	५८
१८	आकाश और दूसरे द्रव्योंके साथका निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध	५१०
१९	पुद्गल द्रव्यके जीवके साथ नि० नैमित्तिक सम्बन्ध	५११
२०	पुद्गलका जीवके साथका नि० नै० सं०	५१२
२१	जीवका उपकार	५१३

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	छहों द्रव्य अपने २ स्वरूपमें सदा परिणमते है, कोई द्रव्य किसीका कभी भी प्रेरक नहीं है वस्तुकी प्रत्येक अवस्था भी "स्वतः सिद्ध" असहाय	४३२
	रागद्वेष परिणामका मूल प्रेरक कौन	४३२
३१	नित्यका लक्षण	४३३
३२	एक वस्तुमें दो विरुद्ध धर्म सिद्ध करनेकी रीति	४३३
	अर्पित अनर्पितके द्वारा (मुख्य-गौणके द्वारा) अनेकान्त स्वरूपका कथन,	४३४
	विकार सापेक्ष है कि निरपेक्ष ?	४३८
	अनेकान्तका प्रयोजन	४३८
	एक द्रव्य दूसरे द्रव्यका कुछ भी कर सकता है इस मान्यतामें आने वाले दोषोंका वर्णन, संकर, व्यतिकर, अधिकरण, परस्पराश्रय, संशय, अनवस्था, अप्रतिपत्ति, विरोध, अभाव,	४३८-४१
	मुख्य और गौणका विशेष	४४२
३३	परमाणुओंमें बन्ध होनेका कारण	४४२
३४	परमाणुओंमें बन्ध कब नहीं होता	४४३
	इस सूत्रका सिद्धान्त	४४४
३५	परमाणुओंमें बन्ध कब नहीं होना	४४५
३६	परमाणुओंमें बन्ध कब होता है ?	४४६
३७	दो गुण अधिकके साथ मिलने पर नई व्यवस्था कैसी हो ?	४४६
३८	द्रव्यका दूसरा लक्षण (गुण-पर्यायकी व्याख्या)	४४७
३९-४०	काल भी द्रव्य है-व्यवहार कालका भी वर्णन	४४८-४९
४१	गुणका वर्णन	४५०
	इस सूत्रका सिद्धान्त—	४५०
४२	पर्यायका लक्षण—इस सूत्रका सिद्धान्त	४५०-४५१

उपसंहार

छहों द्रव्योंको लागू होनेवाला स्वरूप, द्रव्योंकी संख्या-नाम, ४५२

सूत्र नम्बर	विषय	पृष्ठ संख्या
	अजीवका स्वरूप, धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाश, का[illegible] पुद्गल	
	स्याद्वाद सिद्धान्त—अस्तिकाय	
	जीव और पुद्गलद्रव्यकी सिद्धि १–२	
	उपादान-निमित्त सम्बन्धी सिद्धान्त	
	उपरोक्त सिद्धान्तके आधारसे जीव, पुद्गलके अतिरिक्त चार द्रव्योंकी सिद्धि	
	आकाश द्रव्यकी सिद्धि	
	काल द्रव्यकी सिद्धि	
	अधर्मास्तिकाय-धर्मास्तिकायकी सिद्धि ५–६	
	इन छह द्रव्योंके एक ही जगह होनेकी सिद्धि	
	अन्य प्रकारके छह द्रव्योंके अस्तित्वकी सिद्धि विस्तारसे	

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	निमित्तनैमित्तिकके दृष्टान्त	४८३
	प्रयोजनभूत	४८४
	अध्याय छट्ठा	
	भूमिका	४८६
	सात तत्त्वोंकी सिद्धि	४८६
	सात तत्त्वोंका प्रयोजन	४८७
	तत्त्वोंकी श्रद्धा कब हुई कही जाय ?	४८६
१	आस्रवमें योगके भेद और उसका स्वरूप	४६०
२	आस्रवका स्वरूप	४६१
३	योगके निमित्तसे आस्रवके भेद	४६३
	पुण्याश्रव और पापाश्रवके सम्बन्धमें भूल	४६४
	शुभयोग और अशुभयोगके अर्थ	४६५
	आस्रवमें शुभ और अशुभ भेद क्यों ?	४६५
	शुभ भावोंसे भी ७ या ८ कर्म बन्धते हैं तो शुभ परिणामको पुण्यास्रवका कारण क्यों कहा ?	४६५–४६६
	कर्मोंके बन्धनेकी अपेक्षासे शुभ-अशुभ योग ऐसे भेद नहीं हैं	४६६
	शुभ भावसे पापकी निर्जरा नहीं होती	४६६
	इस सूत्रका सिद्धान्त	४६७
४	आस्रवके दो भेद	४६७
	कर्म बन्धके चार भेद	४६८
५	साम्परायिक आस्रवके ३६ भेद	४६६
	२५ प्रकारकी क्रियाओंके नाम और अर्थ	४६६
६	आस्रवमें हीनाधिकता का कारण	५०३
७	अधिकरण (निमित्त कारण-) के भेद	५०३
८	जीव अधिकरणके भेद (१०८ भेदका अर्थ)	५०४
६	अजीवाधिकरण आस्रवके भेद	५०६
१०	ज्ञान-दर्शनावरण कर्मके आस्रवका कारण	५०७

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
११	असाता वेदनीयके आस्रवके कारण	५१०
	इस सूत्रका सिद्धान्त	५११
१२	साता वेदनीयके आस्रवके कारण	५१२
१३	अनन्त संसारके कारणरूप दर्शनमोहके आस्रवके कारण	५१४
	केवली भगवान्‌के अवर्णवाद	५१५
	श्रुतके अवर्णवादका स्वरूप	५१७
	सघके " "	५१८
	धर्मके " "	५१९
	देवके " "	५२०
	इस सूत्रका सिद्धान्त	५२२
१४	चारित्र मोहनीयके आस्रवके कारण	५२३
१५	नरकायुके आस्रवके कारण	५२४
१६	तिर्यंच आयुके आस्रवके कारण	५२६
१७-१८	मनुष्यायुके आस्रवके कारण	५२७ ५२८
१९	सर्व आयुओंके आस्रवके कारण	५२९
२०-२१	देवायुके आस्रवके कारण	५३०-३१
२२	अशुभ नामकर्मके आस्रवके कारण	५३१-५३२
२३	शुभनाम कर्मके आस्रवके कारण	५३३
२४	तीर्थंकर नाम कर्मके आस्रवके कारण	५३४
	दर्शन विशुद्धि आदि सोलह भावनाओंका स्वरूप	५३५-५३८
	तीर्थंकरोंके तीन भेद	

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	अध्याय सातवाँ	
	भूमिका	५५५
१	व्रतका लक्षण	५४७
	इस सूत्र कथित व्रत, सम्यग्दृष्टिके भी शुभास्रव है बन्धका कारण है उनमें अनेक शास्त्राधार	५४७ से ५५६
	इस सूत्रका सिद्धान्त	५५६
२	व्रतके भेद	५५६
	इस सूत्र कथित त्यागका स्वरूप	५५८
	अहिंसा, सत्यादि चार व्रत सम्बन्धी	५५८–५६
	त्रस हिंसाके त्याग सम्बन्धी	५५६
३	व्रतोंमें स्थिरताके कारण	५५६
४	अहिंसाव्रतकी पाँच भावनायें	५६०
५	सत्यव्रतकी पाँच भावनायें	५६१
६	अचौर्यव्रतकी पाँच भावनायें	५६३
७	ब्रह्मचर्य व्रतकी पाँच »	५६३
८	परिग्रह त्याग व्रतकी पाँच भावनायें	५६४
९-१०	हिंसा आदिसे विरक्त होनेकी भावना	५६५–५६६
११	व्रतधारी सम्यग्दृष्टिकी भावना	५६७
१२	व्रतोंकी रक्षाके लिये सम्यग्दृष्टिकी विशेष भावना	५६९
	जगतका स्वभाव	५६९
	शरीरका स्वभाव	५७१
	संवेग, वैराग्य, विशेष स्पष्टीकरण	५७२–५७३
१३	हिंसा, पापका लक्षण	५७४
	आत्माके शुद्धोपयोगरूप परिणामको घातनेवाला भाव ही हिंसा है	५७५
	१३ वें सूत्रका सिद्धान्त	५७७
१४	असत्यका स्वरूप	५७७
	सत्यका परमार्थ स्वरूप	५७७

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
१५	चोरीका स्वरूप	४८०
१६	अब्रह्म-(कुशील) का स्वरूप	४८१
१७	परिग्रहका स्वरूप	४८२
१८	व्रतीकी विशेषता	४८२
	द्रव्यलिंगीका अन्यथापन	४८३
	१८ वें सूत्रका सिद्धान्त	४८४
१९	व्रतीके भेद	४८६
२०	सागारके भेद	४८६
२१	अणुव्रतके सहायक सात शीलव्रत	४८६
	तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतोंका स्वरूप	४८७
	ध्यानमें रखने योग्य सिद्धान्त	४८८
२२	व्रतीको सल्लेखना धारण करनेका उपदेश	४८८
२३	सम्यग्दर्शनके पाच अतिचार	४८९
	पांच अतिचारके स्वरूप	४९१
२४	पांच व्रत और सात शीलोंके अतिचार	४९२
२५	अहिंसाणुव्रतके पांच अतिचार	४९२
२६	सत्याणुव्रतके अतिचार	४९३
२७	अचौर्याणुव्रतके पांच अतिचार	४९४
२८	ब्रह्मचर्याणुव्रतके पांच अतिचार	४९४
२९	परिग्रह परिमाण अणुव्रतके पांच अतिचार	४९५
३०	दिग्व्रतके पांच अतिचार	४९५
३१	देशव्रतके पांच अतिचार	४९६
३२	अनर्थदण्डव्रतके पांच अतिचार	४९६
३३	सामायिक शिक्षाव्रतके पांच अतिचार	४९८
३४	प्रोषधोपवास शिक्षाव्रतके पांच अतिचार	४९९
३५	उपभोग परिभोग परिमाण शिक्षाव्रतके पांच अतिचार	४९९
३६	अतिथि संविभाग व्रतके पांच अतिचार	५००

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
३७	सल्लेखनाके पाँच अतिचार	५६८
३८	दानका स्वरूप	५६८
	करुणादान	६०१
३६	दानमें विशेषता	६०१
	नवधा भक्तिका स्वरूप-विधि	६०१
	द्रव्य, दाता और पात्रकी विशेषता	६०२-६०३
	दान सम्बन्धी जानने योग्य विशेष बातें	६०३
	उपसंहार	६०४

अध्याय आठवाँ

	भूमिका	६०६
१	बन्धके कारण	६०६
	बन्धके पाँच कारणोंमें अन्तरंग भावोंकी पहिचान करना चाहिये	६१०
	मिथ्यादर्शनका स्वरूप	६११
	मिथ्या अभिप्रायकी कुछ मान्यतायें	६१४
	मिथ्यादर्शनके दो भेद	६१५
	गृहीत मिथ्यात्वके भेद,—एकान्त, संशय, विपरीत, अज्ञान विनय उनका वर्णन तथा विशेष स्पष्टीकरण	६१६-६२०
	अविरति, प्रमाद, कषाय और योगका स्वरूप	६२०-६२१
	किस गुणस्थानमें क्या बन्ध होता है ?	६२२
	महापाप कौन है ? इस सूत्रका सिद्धान्त	६२२
२	बन्धका स्वरूप	६२२
३	बन्धके भेद	६२६
४	प्रकृति बन्धके मूल भेद (आठ कर्मके नाम)	६२६
५	प्रकृति बन्धके उत्तर भेद	६२७
६	ज्ञानावरण कर्मके ५ भेद	६२८
७	दर्शनावरण कर्मके ६ भेद	६२६
८	वेदनीयकर्मके दो भेद	६३०

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	अध्याय नवमाँ	
	भूमिका, संवरका स्वरूप	६४५
	संवरकी विस्तारसे व्याख्या	६४६–४८
	ध्यानमें रखने योग्य बातें	६४६
	निर्जराका स्वरूप	६५१
१	संवरका लक्षण	६५४
२	संवरके कारण	६५६
	गुप्तिका स्वरूप	”
३	निर्जरा और संवरका कारण	६५८
	तपका अर्थ–स्वरूप और उस सम्बन्धी होनेवाली भूल	६५६
	तपके फलके बारेमें स्पष्टीकरण	६६१
४	गुप्तिका लक्षण और भेद	६६१
	गुप्तिकी व्याख्या	६६२
५	समितिके पाँच भेद	६६३
	उस सम्बन्धमें होनेवाली भूल	६६३
६	उत्तम क्षमादि दश धर्म	६६६
	उस सम्बन्धमें होनेवाली भूल	६६७
७	बारह अनुप्रेक्षा	६७१
८	परीषह सहन करनेका उपदेश	६७६
६	परीषहके २२ भेद	६८०
	परीषह जयका स्वरूप	६८१ से ६८५
	इस सूत्रका सिद्धान्त	६८५
१०	दशमेंसे बारहवें गुणस्थान तककी परीषहें	६८८
११	तेरहवें गुणस्थानमें परीषह	६८६
	केवली भगवान्‌को आहार नहीं होता, इस सम्बन्धमें स्पष्टीकरण	६६१ से ६६५

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	कर्म सिद्धान्तके अनुसार केवलीके अन्नाहार होता ही नहीं	६६५
	सूत्र १०–११ का सिद्धान्त और ८ आठवें सूत्रके साथ उसका सम्बन्ध	६६६
१२	६ से ६ में गुणस्थान तककी परीषह	६६६
१३	ज्ञानावरण कर्मके उदयसे होनेवाली परीषह	६६७
१४	दर्शन मोहनीय तथा अन्तरायसे होनेवाली परीषह	६६७
१५	चारित्र मोहनीयसे होनेवाली परीषह	६६८
१६	वेदनीय कर्मके उदयसे होनेवाली परीषहें	६६८
१७	एक जीवके एक साथ होनेवाली परीषहोंकी संख्या	६६८
१८	चारित्रके पॉच भेद और व्याख्या	७०१
	छट्ठे गुणस्थानकी दशा; चारित्रका स्वरूप	७०२–३
	चारित्रके भेद किसलिये बताये ?	७०३
	सामायिकका स्वरूप, व्रत और चारित्रमें अन्तर	७०४–६
	निर्जरा तत्त्वका वर्णन	७०६
१६	बाह्यव्रतके ६ भेद–व्याख्या—	७०७
	सम्यक् तपकी व्याख्या	७१०
	तपके भेद किसलिये हैं ?	७१०
२०	अभ्यन्तर तपके ६ भेद	७११
२१	अभ्यन्तर तपके उपभेद	७१२
२२	सम्यक् प्रायश्चितके नवभेद	७१३
	निश्चय प्रायश्चितका स्वरूप	७१४
	निश्चय प्रतिक्रमण–आलोचनाका स्वरूप	७१४
२३	सम्यक् विनय तपके चार भेद	७१५
	निश्चय विनयका स्वरूप	”
२४	सम्यक् वैयावृत्य तपके १० भेद	”
२५	सम्यक् स्वाध्याय तपके पॉच भेद	७१७
२६	सम्यक व्युत्सर्ग तपके भेद	७१८

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
२७	सम्यक् ध्यान तपका लक्षण	७१६
२८	ध्यानके भेद	७२१
२६	मोक्षके कारणरूप ध्यान	७२१
३०-३१-३२-३३	आर्त्तध्यानके भेद	७२२-२३
३४	गुणस्थान अपेक्षा आर्त्तध्यानके स्वामी	७२३
३५	रौद्रध्यानके भेद और स्वामी	७२४
३६	धर्मध्यानके भेद	७२४
३७	शुक्लध्यानके स्वामी	७२६
३८	शुक्लध्यानके चार भेदोंमेसे बाकीके दो भेद किसके हैं ?	७२७
३६	शुक्लध्यानके चार भेद	७२८
४०	योग अपेक्षा शुक्लध्यानके स्वामी	७२८
	केवलीके मनोयोग सम्बन्धी स्पष्टीकरण	७२६
	केवलीके दो प्रकारका वचनयोग	७२६
	क्षपक तथा उपशमकके चार मनोयोग तथा वचनयोगका स्पष्टीकरण	७३०-७३१
४१-४२	शुक्लध्यानके प्रथम दो भेदोंकी विशेषता	७३१
४३	वितर्कका लक्षण	७३२
४४	वीचारका लक्षण	७३२
	व्रत, गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहजय, बारह प्रकारके तप आदि सम्बन्धी खास ध्यानमें रखने योग्य स्पष्टीकरण	७३४ से ७३६
४५	पात्र अपेक्षा निर्जरामें होनेवाली न्यूनाधिकता	७३७
४६	निर्ग्रन्थ साधुके भेद-व्याख्या	७४०
	परमार्थ निर्ग्रन्थ-व्यवहार निर्ग्रन्थ	७४१
४७	पुलाकादि मुनियोंमें विशेषता	७४२ से ४५
	उपसंहार	७४५ से ७५०

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	दशवाँ अध्याय	
	भूमिका	७५१
१	केवलज्ञानकी उत्पत्तिका कारण	”
	केवलज्ञान होते ही मोक्ष क्यों नहीं होता	७५४–५६
२	मोक्षके कारण और उसका लक्षण	७५६
	मोक्ष यत्नसे साध्य है	७५७
३-४	मोक्षदशामें कर्मोंके अलावा किसके अभाव होता है	७५६–७६०
५	मुक्त जीवोंका स्थान	७६०
६	मुक्त जीवके ऊर्ध्वगमनका कारण	७६१
७	सूत्र कथित ऊर्ध्वगमनके चारों कारणोंके दृष्टान्त	”
८	लोकाग्रसे आगे नही जानेका कारण	७६२
९	मुक्त जीवोंमें व्यवहारनयकी अपेक्षासे भेद	७६३–६७
	उपसंहार–मोक्षतत्त्वकी मान्यता सम्बन्धी होनेवाली भूल और उसका निराकरण	७६७
	अनादि कर्म बन्धन नष्ट होनेकी सिद्धि	७६८
	आत्माके बन्धनकी सिद्धि	७७२
	मुक्त होनेके बाद फिर बन्ध या जन्म नहीं होता	७७३
	बन्ध जीवका स्वाभाविक धर्म नहीं	७७४
	सिद्धोंका लोकाग्रसे स्थानांतर नहीं होता	”
	अधिक जीव थोड़े क्षेत्रमें रहते हैं ?	७७५
	सिद्ध जीवोंके आहार	७७६
	परिशिष्ट—१—ग्रन्थका सारांश	७७८
	मोक्षमार्गका दो प्रकारसे कथन	७७९
	व्यवहार मोक्षमार्ग साधन है इसका क्या अर्थ	”
	मोक्षमार्ग दो नहीं	७८०
	निश्चय मोक्षमार्गका स्वरूप–व्यवहार मोक्षमार्गका स्वरूप	

सूत्र नम्बर	विषय	पत्र संख्या
	व्यवहार मुनिका स्वरूप निश्चयी मुनिका स्वरूप निश्चयीके अभेदका समर्थन	७८०–८१
	निश्चय रत्नत्रयकी कर्त्ताके साथ अभेदता–कर्मरूपके साथ तथा करणरूपके साथ अभेदता	७८३
	सम्प्रदान-अपादान-और सम्बन्ध स्वरूपके साथ अभेदता	७८३–८४
	निश्चयरत्नत्रयीकी आधार स्वरूपके साथ अभेदता	७८४
	निश्चय रत्नत्रयकी क्रिया स्वरूपके साथ अभेदता	”
	आत्माकी गुणस्वरूपके साथ अभेदता	७८५
	पर्यायोंके स्वरूपका अभेदत्व	”
	प्रदेश स्वरूपका अभेदपन	”
	अगुरुलघुस्वरूपका अभेदपन	७८६
	उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूपकी अभेदता	”
	निश्चय-व्यवहार माननेका प्रयोजन	७८७
	तत्त्वार्थसार ग्रन्थका प्रयोजन	”
	इस ग्रन्थके कर्ता पुद्गल हैं आचार्य नहीं	७८८
	परिशिष्ट—२	७९०
	प्रत्येक द्रव्य और उसके प्रत्येक समयकी पर्यायकी स्वतंत्रताकी घोषणा	७९०
	परिशिष्ट—३	
	साधक जीवकी दृष्टिकी सतत कक्षा (-स्तर)	७९२
	अध्यात्मका रहस्य	७९४
	पापुण्यभाव और उसमें किस ओर झुके !	७९५
	परिशिष्ट—४	
	शास्त्रका संक्षिप्त सार	७९६

★

इस शास्त्रकी टीकामें लिये गये आधारभूत शास्त्र

१ सर्वार्थसिद्धि टीका
२ राजवार्तिक
३ श्लोकवार्तिक
४ अर्थ प्रकाशिका
५ सर्वार्थसिद्धि प्रश्नोत्तर
६ मोक्षशास्त्र (पन्नालालजी साहित्याचार्य टीका)
७ तत्त्वार्थ सूत्र (इङ्गलिश)
८ तत्त्वार्थसार
९ समयसार
१० प्रवचनसार
११ पंचास्तिकाय
१२ नियमसार
१३ परमात्म प्रकाश
१४ अष्टपाहुड
१५ बारस अणुवेक्खा
१६ स० सार प्रवचन भा० १-२-३
१७ नियमसार प्रवचन भा० १
१८ समयसार नाटक
१९ " राजमलजीकृत (कलश टीका)
२० पचाध्यायी
२१ धवला टीका
२२ जयधवला टीका
२३ तिलोय-पण्णत्ति
२४ गोमट्टसार
२५ श्रीमद् राजचन्द्र
२६ महाबन्ध
२७ आत्मसिद्धि शास्त्र
२८ बृहद् द्रव्य संग्रह
२९ द्रव्य संग्रह
३० पुरुषार्थ सिद्धि उपाय
३१ कार्तिकेयानुप्रेक्षा
३२ मोक्षमार्ग प्रकाशक
३३ समयसार जयसेनाचार्य टीका
३४ पद्मनन्दी पचविंशतिका
३५ रत्नकरण्ड श्रावकाचार
३६ भगवती आराधना
३७ योगसार (योगीन्द्रदेव)
३८ चर्चा समाधान (भूधरदासजी)
३९ प्रमेयरत्नमाला
४० न्याय दीपिका
४१ प्रमेयकमलमार्तण्ड
४२ अध्यात्म कमलमार्तण्ड
४३ आलाप पद्धति
४४ भाव संग्रह
४५ जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (बरैयाजी)
४६ आप्तमीमांसा
४७ चारित्रसार
४८ अनुभव प्रकाश
४९ बनारसी विलास- परमार्थ वचनिका
५० सत्तास्वरूप
५१ रहस्यपूर्ण चिट्ठी (मल्लिजी)
५२ छहढाला
५३ जैनसिद्धान्त दर्पण वगैरह
५४ श्रीमद् राजचन्द्र